اٰیاتها ٥ | ١١١ سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ ٦ | رکوعها ١

सूरए लहब मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला[1]

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢

तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया[2] उसे कुछ काम न आया उस का माल और न जो कमाया[3]

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِيْ

अब धंसता है लपट मारती आग में वोह और उस की जोरू[4] लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए उस

جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

के गले में खजूर की छाल का रस्सा[5]

اٰیاتها ٤ | ١١٢ سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ ٢٢ | رکوعها ١

सूरए इख़्लास मक्किय्या है, इस में चार आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला[1]

चाहे दुन्या में रहे, चाहे उस की लिक़ा क़बूल फ़रमाए। उस बन्दे ने लिक़ाए इलाही इख़्तियार की। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे आबा, हमारी औलादें सब क़ुरबान। **1 :** "सूरए अबी लहब" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, बीस कलिमे, सत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कोहे सफ़ा पर अ़रब के लोगों को दा'वत दी हर त़रफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उन से अपने सिद्क़ो अमानत की शहादतें लेने के बा'द फ़रमाया : "اِنِّیْ لَکُمْ نَذِیْرٌ بَیْنَ یَدَیْ عَذَابٍ شَدِیْدٍ" इस पर अबू लहब ने हुज़ूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुम ने हमें इस लिये जम्अ़ किया था। इस पर येह सूरत शरीफ़ नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़रफ़ से जवाब दिया : **2 :** अबू लहब का नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा है। येह अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बेटा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का चचा था, बहुत गोरा ख़ूब सूरत आदमी था, इसी लिये इस की कुन्यत अबू लहब है और इसी कुन्यत से वोह मश्हूर था। दोनों हाथों से मुराद इस की ज़ात है। **3 :** या'नी उस की औलाद। मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये अपने माल व औलाद को फ़िदया कर दूंगा, इस आयत में इस का रद फ़रमाया गया कि येह ख़याल ग़लत़ है, उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं। **4 :** उम्मे जमील बिन्ते ह़र्ब बिन उमय्या अबू सुफ़्यान की बहन जो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से निहायत इ़नाद व अ़दावत रखती थी और बा वुजूदे कि बहुत दौलत मन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अ़दावत में इन्तिहा को पहुंची थी कि ख़ुद अपने सर पर कांटों का गठ्ठा ला कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के रास्ते में डालती ताकि हुज़ूर को और हुज़ूर के अस्ह़ाब को ईज़ा व तक्लीफ़ हो और हुज़ूर की ईज़ा रसानी उस को इतनी प्यारी थी कि वोह इस काम में किसी दूसरे से मदद लेना भी गवारा न करती थी। **5 :** जिस से कांटों का गठ्ठा बांधती थी, एक रोज़ येह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पथ्थर पर बैठ गई, एक फ़िरिश्ते ने ब हुक्मे इलाही उस के पीछे से उस के गठ्ठे को खींचा वोह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वोह मर गई। **1 :** "सूरए इख़्लास" मक्किय्या व बक़ौले मदनिय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार या पांच आयतें, पन्दरह कलिमे, सेंतालीस ह़र्फ़ हैं। अह़ादीस

www.dawateislami.net